पाठ – परीक्षा

पाठ का सारांश

प्रेमचंद हिन्दी के महान कथा सम्राट है। इनका वास्तविक नाम धनपतराय था। इन्होंने समाज सुधार और राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत रचनाओं का सृजन किया। इस पाठ में बताया गया है कि देवगढ़ में सरदार सुजान सिंह नामक दीवान था। वह बूढ़ा होता जा रहा था।

इसलिए उसने सोचा कि कहीं भूल-चूक में बुढ़ापे में दाग न लग जाए। राजा साहब अपने नीतिकुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। वह इस पद पर कार्य नहीं करना चाहते थे। दीवान साहब को राजा ने बहुत समझाया लेकिन वह न माने तब राजा ने शर्त रखी कि रियासत के लिए नया दीवान उनको ही खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन सुयोग्य दीवान की जरूरत के लिए पत्रों में विज्ञापन निकाला गया। उसमें हृष्ट-पुष्ट उम्मीदवार का होना आवश्यक बताया गया। सैकड़ों आदमी इस विज्ञापन को देखकर अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चले आए। सुजान सिंह ने इन सभी महानुभावों का आदर-सत्कार किया। सभी आदमी अपनी अच्छाई का ही प्रदर्शन कर रहे थे जबकि वे असली जीवन में इतने महान न थे. तब सुजान सिंह ने हॉकी के खेल का प्रस्ताव सभी के समक्ष रखा। सभी खिलाड़ी हॉकी का खेल खेलकर वापस थके हुए आ रहे थे तभी उन्होंने रास्ते में एक किसान को देखा जिसकी गाड़ी नाले में फँस गई थी। किसी ने उसकी मदद न की तब अन्त में एक खिलाड़ी आता है जिसके पैरों में चोट लगी हुई थी. तब भी उसने किसान की सहायता की। यही व्यक्ति अन्त में इस रियासत का दीवान बनता है। उसका नाम जानकी नाथ था। सभी उसे ईर्ष्यां की नज़रों से देखने लगे। सुजानसिंह सभी को बताते हैं कि उसने स्वयं जख्मी होकर भी किसान की सहायता की। ऐसा व्यक्ति कभी किसी गरीब को नहीं सताएगा।

शब्दार्थ

- विनय – प्रार्थना
- अवस्था ढलना – बूढ़ा होना, उम्र ढलना
- नेकनामी – प्रसिद्धि, यश
- नीतिकुशल – आचरण में निपुण
- हृष्ट-पुष्ट – स्वस्थ, तंदुरुस्त
- मंदाग्नि – कमजोर व्यक्ति (जिसमें भोजन पचाने की क्षमता कम हो)
- सुशोभित – सुंदर, शोभायमान
- सुयोग्य – अच्छी योग्यतावाला
- मुल्क – देश, राज्य, रियासत
- तहलका – हलचल, खलबली
- परखना – आजमाना
- सनद – शैक्षिक एवं दक्षता प्रमाण पत्र, प्रमाण पत्र
- घृणा – नफरत
- नम्रता – विनम्र, नरमी
- सदाचार – अच्छा व्यवहार
- मँजा हुआ खिलाड़ी – कार्य में निपुण

- अप्रेंटिस – उम्मीदवार
- भलेमानुस – अच्छे व्यक्ति
- पथिक – राहगीर, रास्ते पर चलने वाला
- ढकेलना – धक्का देकर आगे बढ़ाना
- झुंझलाकर – परेशान होकर
- उभरना – बाहर निकालना
- आपत्ति – मुसीबत
- सहमना – डरना
- स्वार्थ – लालच
- मद – नशा
- उदारता – दया
- वात्सल्य – प्रेम
- अकस्मात – अचानक
- ठिठक जाना – रुक जाना
- उकसाना – जगाना, भड़काना
- उबारना – बचाना
- संदेह – शक
- भाँप जाना – समझ जाना
- पैठ जाना – घुस जाना
- पहाड़ होना – कठिन होना
- निदान – अंत
- धनाढ्य – धनी लोग
- कलेजा धड़कना – घबराना
- सौभाग्य – अच्छा भाग्य
- संकल्प – निश्चय
- चित्त – हृदय, मन
- दृढ़ – मजबूत
- कंटोप – टोपी, कानों को ढकने वाला

पाठ से

मेरी समझ से

1. (क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए।

(1) महाराज ने दीवान को ही उनका उत्तराधिकारी चुनने का कार्य उनके किस गुण के कारण सौंपा ?

- सादगी
- उदारता
- बल
- नीतिकुशलता

उत्तर – **नीतिकुशलता (☆)**

(2) दीवान साहब द्वारा नौकरी छोड़ने के निश्चय का क्या कारण था ?

- परमात्मा की याद
- बदनामी का भय
- राज-काज सँभालने योग्य शक्ति न रहना
- चालीस वर्ष की नौकरी पूरी हो जाना

उत्तर – राज-काज सँभालने योग्य शक्ति न रहना। (☆)

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने ?

उत्तर – हमने ये उत्तर इस लिए चुने क्योंकि इन बिन्दुओं का वर्णन पाठ के अन्तर्गत हुआ है।

शीर्षक

(क) आपने जो कहानी पढ़ी है, इसका नाम प्रेमचन्द ने 'परीक्षा' रखा है। उन्होंने इस कहानी का यह नाम क्यों दिया होगा? अपने उत्तर के कारण भी लिखिए।

उत्तर – इस कहानी का नाम प्रेमचन्द ने 'परीक्षा' इसलिए रखा होगा क्योंकि रियासत में दीवान के पद के लिए परीक्षा का आयोजन किया जाता है। हमने यह उत्तर इसलिए चुना क्योंकि इस पात में बताया गया है कि जानकीनाथ दीवान की परीक्षा में सफल हो जाता है।

(ख) यदि आपको इस कहानी को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा ? यह भी बताइए।

उत्तर – मैं इस पाठ का नाम नया **'दीवान'** रखूँगा क्योंकि इस पाठ में नया **'दीवान'** बनाने के लिए एक विज्ञापन निकाला गया था।

पंक्तियों पर चर्चा

कहानी में से चुनकर यहाँ कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इनका अर्थ लिखिए।

प्रश्न – "इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी, जिसके हृदय में दया हो और साथ-साथ आत्मबल। हृदय वह जो उदार हो, आत्मबल वह जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे। ऐसे गुणवाले संसार में कम हैं और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं।"

उत्तर – इन पंक्तियों द्वारा सुजानसिंह ने बताया कि दीवान के पद के लिए उन्हें ऐसे व्यक्ति की जरूरत है जिसके भीतर दया का भाव विद्यमान हो और वह आत्मबल से परिपूर्ण हो। उसका हृदय उदार हो। वह आपत्ति के समय डरे न बल्कि वीरता के साथ उसका सामना करें। इन गुणों वाले व्यक्ति संसार में बहुत कम हैं। जो कुछ हैं वे मान के शिखर पर पहले से बैठे हुए हैं।

सोच-विचार के लिए

(क) नौकरी की चाह में आए लोगों ने नौकरी पाने के लिए कौन-कौन से प्रयत्न किए ?

उत्तर – नौकरी की चाह में आए लोगों ने नौकरी पाने के लिए अनेक प्रयत्न किए। जैसे मिस्टर 'अ' जो कि 9.00 बजे तक सोते थे. आज सुबह जल्दी उठकर बगीचे में टहलने लगे। मिस्टर 'ल' को किताबों से नफरत थी लेकिन अब वह किताब पढ़ने लगे।

(ख) "उसे किसान की सूरत देखते ही सब बातें ज्ञात हो गई।" खिलाड़ी को कौन-कौन सी बातें पता चल गई?

उत्तर – किसान की सूरत देखते ही उसे समझ आ गया कि यह किसान कोई और नहीं बल्कि दीवान सुजानसिंह हैं। वह यह सभी समझ गया कि यह उसकी परीक्षा थी।

(ग) "मगर उन आँखों में सत्कार था, इन आँखों में ईर्ष्या।" किनकी आँखों में सत्कार था और किनकी आँखों में ईर्ष्या थी? क्यों?

उत्तर – रसोईयों और नौकरों की आँखों में सत्कार था और उम्मीदवारों की आँखों में ईर्ष्या थी क्योंकि जानकीनाथ ने किसान की सहायता की जिससे उसे दीवान का पद प्राप्त हुआ। उसे आम जनता की बहुत चिंता थी।

खोजबीन

कहानी में से वे वाक्य खोजका लिखिए जिनसे पता चलता है कि-

(क) शायद युवक बूढ़े किसान की असलियत पहचान गया था।

उत्तर – 'युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ. क्या यह सुजानसिंह तो नहीं है? आवाज मिलती है, चेहरा-मोहरा भी वहीं।

(ख) नौकरी के लिए आए लोग किसी तरह बस नौकरी पा लेना चाहते थे।

उत्तर – 'मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे आजकल वे बगीचे में टहलते हुए ऊषा का दर्शन करते थे। मिस्टर 'द', 'स' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था लेकिन वे सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे।

कहानी की रचना

"लोग पसीने से तर हो गए। खून की गरमी आँख और चेहरों से झलक रही थी।"

प्रश्न – आपको इस कहानी में कौन-कौन सी विशेष बातें दिखाई दे रही हैं? उनकी सूची बनाइए।

उत्तर – कहानी में निम्नलिखित विशेष बातें इस प्रकार है-

(i) खेल बड़े उत्साह से जारी था।

(ii) धावे के लोग जब गेंद को लेकर तेज़ी से उड़ते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है।

(iii) हाँफते- हाँफते लोग बेदम हो गए।

समस्या और समाधान

(क) महाराज के सामने क्या समस्या थी? उन्होंने इसका क्या समाधान खोजा ?

उत्तर – महाराज के सामने यह समस्या थी कि सुजान सिंह के आने के पश्चात दीवान का पद रिक्त हो जाएगा। उन्होंने इसका समाधान निकालते हुए सुजान सिंह से सुयोग्य दीवान लाने के लिए कहा।

(ख) दीवान के सामने क्या समस्या थी? उन्होंने इसका क्या समाधान खोजा ?

उत्तर – दीवान के सामने यह समस्या थी कि नया दीवान किस प्रकार खोजा जाए। उन्होंने इसका समाधान एक पत्र में विज्ञापन निकालकर किया तथा परीक्षा भी करवाई।

(ग) नौकरी के लिए आए लोगों के सामने क्या समस्या थी ? उन्होंने इसका क्या समाधान खोजा ?

उत्तर – नौकरी के लिए आए लोगों के सामने यह समस्या थी कि उन्हें किसी भी प्रकार से नौकरी प्राप्त हो जाए। उन्होंने अपना अच्छा आचरण दिखाकर नौकरी पाने का प्रयास किया।

मन के भाव

"स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और वात्सल्य का नाम भी न था।"

कहानी में से ऐसे ही अन्य नामों को खोजकर नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए।

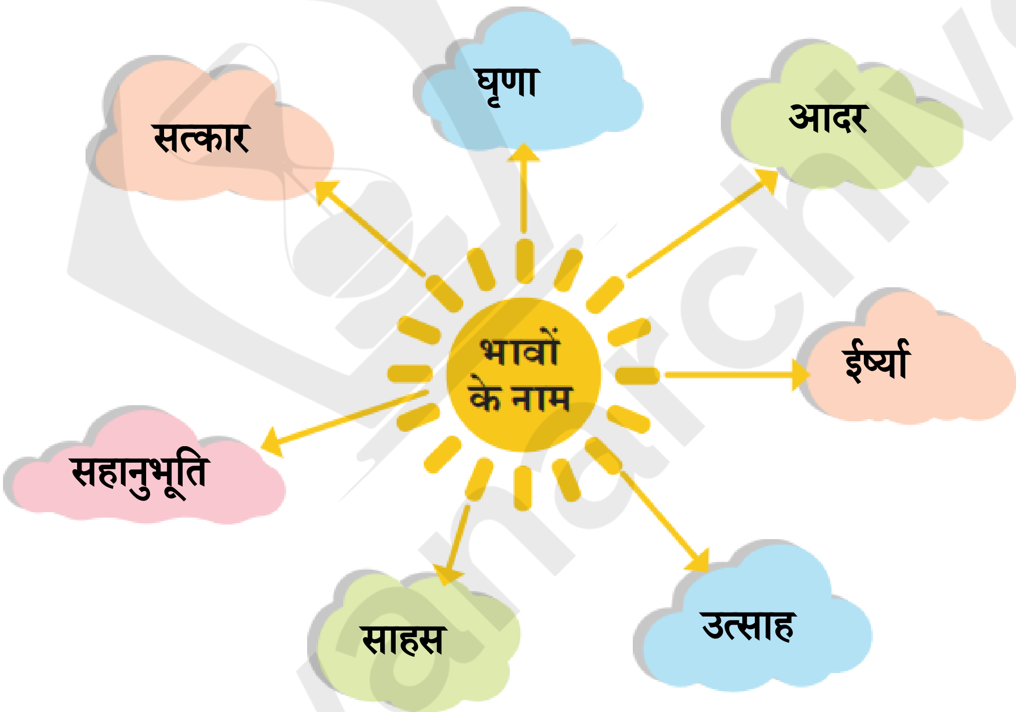

उत्तर – सत्कार, घृणा, आदर, ईर्ष्या, उत्साह, साहस, सहानुभूति।

अभिनय

कहानी में युवक और किसान की बातचीत संवादों के रूप में दी गई है। यह भी बताया गया है कि उन दोनों ने ये बातें कैसे बोलीं। अपने समूह के साथ मिलकर तैयारी कीजिए और कहानी के इस भाग को कक्षा में अभिनय के द्वारा प्रस्तुत कीजिए। प्रत्येक समूह से अभिनेता या अभिनेत्री कक्षा में सामने आएँगे और एक-एक संवाद अभिनय के साथ बोलकर दिखाएँगे।

उत्तर – छात्र कक्षा में अभिनय करें।

विपरीतार्थक शब्द

प्रश्न – नीचे दिए गए विपरीतार्थक शब्दों के सही जोड़े बनाइए-

स्तम्भ-1	स्तम्भ-2
1. आना	1. निर्दयी
2. गुण	2. निराशा
3. आदर	3. जीत
4. स्वस्थ	4. अवगुण
5. कम	5. अस्वस्थ
6. दयालु	6. अधिक
7. योग्य	7. जाना
8. हार	8. अयोग्य
9. आशा	9. अनादर

उत्तर –

स्तम्भ-1	स्तम्भ-2
1. आना	7. जाना
2. गुण	4. अवगुण
3. आदर	9. अनादर
4. स्वस्थ	5. अस्वस्थ
5. कम	6. अधिक
6. दयालु	1. निर्दयी
7. योग्य	8. अयोग्य
8. हार	3. जीत
9. आशा	2. निराशा

कहावत

"गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।" यह वाक्य एक कहावत है।

प्रश्न – नीचे कुछ कहावतें और उनके भावार्थ दिए गए हैं। आप इन कहावतों को कहानी से जोड़कर लिखिए-

उत्तर –

(i) अधजल गगरी छलकत जाए

कहानी से – ज्ञान में अधिक रुचि ना होने पर भी कुछ उम्मीदवार बड़े-बड़े ग्रंथों में डूबे रहते और अकड़कर चलते इसे कहते हैं – अधजल गगरी छलकत जाए।

(ii) अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत

egyanarchive

कहानी से – जब पंडित जानकीनाथ का दीवान के लिए चुनाव हुआ तब अन्य उम्मीदवार सोचने लगे कि काश ! हमने उस समय किसान की मदद की होती तो आज हमारा चयन होता पर अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत ।

(iii) एक अनार सी बीमार

कहानी से – दीवान का पद प्राप्त करने के लिए लोग व्याकुल हो गए। इसे कहते हैं- एक अनार सी बीमार।

(iv) जो गरजते हैं वे बरसते नहीं हैं

कहानी से – देवगढ़ में आए सभी उम्मीदवार नम्रता की मूर्ति बने हुए थे। परंतु जब किसान पर दया की बात आई तब सब पीछे हट गए। इसीलिए कहते हैं जो गरजते हैं वे बरसते नहीं हैं।

(v) जहाँ चाह, वहाँ राह

कहानी से – युवक घायल था परंतु दूसरों की मदद करने की उसकी चाह के कारण वो किसान की गाड़ी नाले से बाहर निकाल पाया। इसे कहते हैं- जहाँ चाह वहाँ राह ।

पाठ से आगे

अनुमान या कल्पना से

(क) देश के प्रसिद्ध पत्रों में नौकरी का विज्ञापन किसने निकलवाया होगा? आपको ऐसा क्यों लगता है?

उत्तर – देश के प्रसिद्ध पत्रों में नौकरी का विज्ञापन सुजानसिंह ने निकलवाया होगा क्योंकि महाराज ने इन्हें स्वयं के स्थान पर नया दीवान लाने के लिए कहा था।

(ख) विज्ञापन ने पूरे देश में तहलका क्यों मचा दिया होगा ?

उत्तर – विज्ञापन ने पूरे देश में तहलका इसलिए मचा दिया होगा क्योंकि दीवान का पद बहुत बड़ा होता है जो कि अभी रिक्त है।

विज्ञापन

"दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला कि देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की जरूरत है।"

(क) कहानी में इस विज्ञापन की सामग्री को पढ़िए। इसके बाद अपने समूह में मिलकर इस विज्ञापन को अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए बनाइए।

उत्तर – (छात्र स्वयं विज्ञापन बनाने का प्रयास करें।)

✴️ ✨ देवगढ़ दरबार की ओर से विशेष सूचना ✨ ✴️

(ऊपर रंगीन अक्षरों में लिखें, सुनहरे बॉर्डर के साथ)

🎖️ देवगढ़ को चाहिए — एक सुयोग्य दीवान! 🎖️

देवगढ़ राज्य की सेवा एवं समृद्धि हेतु एक निष्ठावान, कुशल और न्यायप्रिय दीवान की आवश्यकता है। इच्छुक उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित हैं।

योग्यता:

- राजनीति एवं प्रशासन में उत्कृष्ट ज्ञान।
- सत्यनिष्ठा, निर्भीकता और न्याय के प्रति प्रतिबद्धता।
- न्यूनतम 10 वर्षों का राजकीय सेवा का अनुभव।
- जनता के हित में कार्य करने की प्रबल इच्छा।

चयन प्रक्रिया:

- लिखित परीक्षा (नीति, प्रशासन और इतिहास से संबंधित)
- व्यक्तिगत साक्षात्कार महाराज देवगढ़ के समक्ष।

आवेदन की अंतिम तिथि: 30 दिन के भीतर।

आवेदन स्थान: देवगढ़ राजमहल, मुख्य सचिवालय।

"आओ, देवगढ़ के स्वर्णिम भविष्य के निर्माता बनो!"

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें:
राजमहल सूचना केंद्र, देवगढ़। (नीचे एक सुंदर सा चित्र बना सकते हैं — जैसे महल का स्केच या राजा की मुहर)

(ख) अपने किसी मनपसंद विज्ञापन को याद कीजिए। आपको वह अच्छा क्यों लगता है? सोचकर अपने समूह में बताइए। अपने समूह के बिन्दुओं को लिख लीजिए।

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

मुझे किताबों की बिक्री का विज्ञापन अच्छा लगता है क्योंकि उसमें अनेक प्रकार की किताबों की सूची होती है। मुझे किताबें पढ़ना भी पसंद है।

(ग) विज्ञापनों से लाभ होते हैं हानि होती है या दोनों?

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

विज्ञापन के लाभ इस प्रकार है-

(i) नए ग्राहकों को आकर्षित करना

(ii) अपनी जानकारी अधिक संख्या में दूसरों तक पहुँचाना।

विज्ञापन से हानि इस प्रकार होती है-

(i) कभी-कभी गलत जानकारी प्राप्त हो जाती है।

(ii) विज्ञापनों पर अंधाधुंध पैसा खर्च किया जाता है।

आगे की कहानी

प्रश्न – 'परीक्षा' कहानी जहाँ समाप्त होती है, उसके आगे क्या हुआ होगा? आगे की कहानी अपनी कल्पना से बनाइए।

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

जानकी नाथ देवगढ़ का दीवान बन जाता है। वह महाराज की आज्ञानुसार अपने सभी कर्त्तव्यों का पालन करता है। एक दिन देवगढ़ में किसान अपने जानवरों को ले जा रहा था। उसमें से एक जानवर दूसरी तरफ भाग गया, तभी वहीं से दीवान जानकीनाथ गुज़र रहे थे। उन्होंने देखा कि किसान दोपहर में जानवरों के पीछे भागते-भागते हाँफ रहा है तो उन्होंने उस किसान की मदद करने का विचार किया। उन्होंने अपने सहायकों को आज्ञा दी कि सभी जानवरों को पकड़ कर किसान के घर छोड़कर आया जाए। दीवान की इस सहायता से किसान के भीतर दीवान के लिए और मान बढ़ गया।

आपकी बात

(क) यदि कहानी में दीवान साहब के स्थान पर आप होते तो योग्य व्यक्ति को कैसे चुनते ?

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

यदि कहानी में दीवान साहब के स्थान पर मैं होता तो योग्य व्यक्ति के चयन के लिए लिखित परीक्षा का आयोजन करता उसके पश्चात् उनके व्यवहार को जानने के लिए सुजानसिंह की तरह परीक्षा का भी आयोजन करता।

(ख) यदि आपको कक्षा का मॉनिटर चुनने के लिए कहा जाए तो आप उसे कैसे चुनेंगे? उसमें किन-किन गुणों को देखेंगे? गुणों की परख के लिए क्या-क्या करेंगे?

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

यदि मुझे कक्षा का मॉनिटर चुनने के लिए कहा जाए तो मैं उसे उसके व्यक्तित्व के आधार पर चुन सकता हूँ। उसमें समझदारी, ईमानदारी कर्त्तव्यपरायणता का भाव विद्यमान होना चाहिए। गुणों की परख के लिए उससे मैं कहूँगा कि वह मेरे शरारत करने पर शिक्षक से कभी न कहे। यदि वह ईमानदार होगा तो शिक्षक से मेरी शिकायत जरूर करेगा।

नया-पुराना

"कोई नए फैशन का प्रेमी, कोई पुरानी सादगी पर मिटा हुआ।"

हमारे आस-पास अनेक वस्तुएँ ऐसी हैं जिन्हें लोग नया फैशन या पुराना चलन कहकर दो भागों में बाँट देते हैं। जो वस्तु आपके माता-पिता या दादा-दादी के लिए नई हो हो सकता है वह आपके लिए पुरानी हो, या जो उनके लिए पुरानी हो, वह आपके लिए नई हो। अपने परिवार या परिजनों से चर्चा करके नीचे दी गई तालिका को पूरा कीजिए-

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

मेरे लिए नई वस्तुएँ	मेरे लिए पुरानी वस्तुएँ	परिवार के बड़ों के लिए नई वस्तुएँ	परिवार के बड़ों के लिए पुरानी वस्तुएँ
• मेरे नए वस्त्र • मेरी नई पुस्तक	पिता जो द्वारा पिछले जन्मदिन पर दी हुई कार	दो दिन पहले खरीदा हुआ मिक्सर-जार	पाँच साल पहले खरीदी हुई साड़ी

वाद-विवाद

"आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह भी तो आखिर एक विद्या है।"

क्या हॉकी जैसा खेल भी विद्या है?

इस विषय पर कक्षा में एक वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। इसे आयोजित करने के लिए कुछ सुझाव आगे दिए गए हैं-

- कक्षा में पहले कुछ समूह बनाएँ। फिर पर्ची निकालकर निर्धारित कर लीजिए कि कौन समूह पक्ष में बोलेंगे, कौन विपक्ष में।
- आधे समूह इसके पक्ष में तर्क दीजिए, आधे समूह इसके विपक्ष में।
- सभी समूहों को बोलने के लिए 5-5 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ध्यान रखें कि प्रत्येक समूह का प्रत्येक सदस्य चर्चा करने तर्क देने आदि कार्यों में भाग अवश्य हैं।

उत्तर – (छात्रों के बीच वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए।)

'हां' पक्ष के तर्क (हॉकी को विद्या मानने के पक्ष में):

- खेल से अनुशासन, एकाग्रता और रणनीति की विद्या सीखी जाती है।
- टीमवर्क और नेतृत्व कौशल (Leadership skills) विकसित होते हैं।
- शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक सतर्कता बढ़ती है।
- खेलों के नियम और तकनीकें भी गहन अध्ययन और अभ्यास से आती हैं, जो विद्या की ही तरह हैं।
- भारत के गौरव में हॉकी का ऐतिहासिक योगदान रहा है — ध्यानचंद जैसे खिलाड़ियों ने इसे "कलात्मक विद्या" के रूप में प्रस्तुत किया।
- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेल भी शिक्षा और करियर का साधन बनते हैं।

'नहीं' पक्ष के तर्क (हॉकी को विद्या न मानने के पक्ष में):

- विद्या का मतलब मुख्यतः ज्ञानात्मक (Academic) और बौद्धिक विकास से है, जो पुस्तकीय अध्ययन से आता है।
- खेल एक मनोरंजन का साधन है, विद्या नहीं।
- खेलों में शारीरिक कौशल ज्यादा महत्वपूर्ण है, मानसिक गहराई या अध्ययन कम।
- विद्या का मूल उद्देश्य ज्ञानार्जन और चरित्र निर्माण है, जबकि खेल केवल प्रतिस्पर्धा और पुरस्कार पर केंद्रित होते हैं।
- यदि सब कुछ विद्या कहलाए, तो विद्या की परिभाषा कमजोर हो जाएगी।

अच्छाई और दिखावा

"हर एक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था।"
अपने समूह में निम्नलिखित पर चर्चा कीजिए और चर्चा के बिन्दु अपनी लेखन-पुस्तिका में लिख लीजिए-

(क) हर व्यक्ति अपनी बुद्धि के अनुसार स्वयं को अच्छा दिखाने की कोशिश करता है। स्वयं को अच्छा दिखाने के लिए लोग क्या-क्या करते हैं?
(संकेत-मेहनत करना, कसरत करना, साफ सुथरे रहना आदि)

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

बाहरी दिखावे पर ध्यान देना:

- अच्छे कपड़े पहनना, फैशन के अनुसार चलना।
- शारीरिक सौंदर्य या फिटनेस बनाए रखना।
- महंगे फोन, गाड़ियाँ या अन्य भौतिक वस्तुएँ दिखाना।

2. अपनी अच्छाइयों का प्रचार करना:

- अपनी उपलब्धियाँ (Achievements) बढ़ा-चढ़ाकर बताना।
- सोशल मीडिया पर 'सफलता की तस्वीरें' साझा करना।
- स्वयं की तुलना दूसरों से बेहतर बताने की कोशिश करना।

3. दूसरों की सहायता करना (कभी दिखावे के लिए):

- दान-पुण्य या समाजसेवा करते हुए प्रचार करना।
- सार्वजनिक रूप से मदद कर 'अच्छा इंसान' कहलाना।

4. बातों में चतुराई दिखाना:

- मीठा बोलना, पर वास्तविकता अलग हो सकती है।
- अपनी गलतियों को छुपाना और दूसरों की गलतियों को उजागर करना।

5. ज्ञान या योग्यता का प्रदर्शन:

- बड़ी-बड़ी बातें करना या जटिल शब्दों का उपयोग करना ताकि बुद्धिमान प्रतीत हों।
- दूसरों को नीचा दिखाकर स्वयं को श्रेष्ठ साबित करना।

6. दिखावटी विनम्रता अपनाना:

- बाहर से विनम्र और सरल बनकर प्रस्तुत होना, जबकि भीतर अहंकार छुपा हो सकता है।

7. आदर्शों की बातें करना:

- बड़ी-बड़ी नैतिक बातें करना, लेकिन स्वयं उनका पालन न करना।
- आदर्शों का प्रचार करना ताकि समाज में अच्छी छवि बने।

(ख) क्या 'स्वयं को अच्छा दिखाने में और स्वयं के अच्छा होने' में कोई अंतर है? कैसे?

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

स्वयं को अच्छा दिखाने में और स्वयं के अच्छा होने में काफी अन्तर होता है। स्वयं को अच्छा हम बाहरी रूप से दिखा सकते हैं जबकि स्वयं का अच्छा होना अर्थात् भीतरी रूप से या मन से अच्छा होना होता है। जो लोग भीतर से अच्छे होते हैं वे सदैव दूसरों की सहायता करते हैं और जो लोग बाहर से अच्छे होते हैं वे दूसरों की सहायता नहीं करते हैं।

परिधान तरह-तरह के

"कोट उतार डाला"

'कोट' एक परिधान का नाम है। कुछ अन्य परिधानों के नाम और चित्र नीचे दिए गए हैं। परिधानों के नामों को इनके सही चित्र के साथ मिलाइए। इन्हें आपके घर में क्या कहते हैं? लिखिए-

उत्तर –

चित्र	नाम	और क्या कहते हैं?
	लहँगा	**घाघरा**
	गमछा	**अँगोछा**
	दुपट्टा	**चुनरी**
	धोती	**धोतर**
	फिरन	**लबादा**

	पगड़ी	**पग, पटके**
	अचकन	**अंगरखा**

आपकी परीक्षाएँ

हम सभी आपके जीवन में अनेक प्रकार की परीक्षाएँ लेते और देते हैं। आप अपने अनुभवों के आधार पर कुछ परीक्षाओं के उदाहरण बताइए। यह भी बताइए कि किसने कब, कैसे और क्यों वह परीक्षा ली?

(संकेत-जैसे, किसी को विश्वास दिलाने के लिए उसके सामने साइकिल चलाकर दिखाना, स्कूल या घर पर कोई परीक्षा देना, किसी को किसी काम की चुनौती देना आदि।)

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

कक्षा में एक दिन सभी को खेल के मैदान में अचानक से फुटबॉल खेलने के लिए बुला लिया गया लेकिन मुझे यह खेल खेलना नहीं आता था। हमें दो अलग-अलग टीम में विभक्त कर दिया गया। मेरा प्रदर्शन बिल्कुल अच्छा न रहा तो सभी लड़के मुझे चिढ़ाने लगे तभी रोहन ने मुझे खेल के कुछ नियम सिखाए और अभ्यास भी कराया जिससे मैं बेहतर प्रदर्शन करने लगा। यही बात शिक्षक को पसंद आई तो उन्होंने रोहन को टीम का कैप्टन बना दिया।

आज की पहेली

यहाँ दिए गए चित्र एक जैसे हैं या भिन्न? इन चित्रों में कुछ अंतर हैं। देखते हैं आप कितने अंतर कितनी जल्दी खोज पाते हैं।

उत्तर –

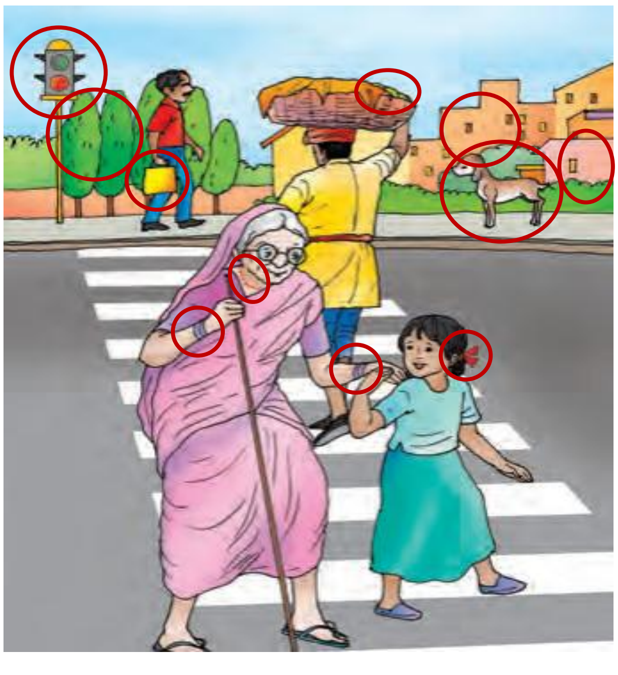

egyanarchive

खोजबीन के लिए

पुस्तक में दिए गए क्यू. आर. कोड की सहायता से आप प्रेमचंद के बारे में और जान-समझ सकते हैं, साथ ही उनकी अन्य कहानियों का आनंद भी उठा सकते हैं

- ईदगाह
- नादान दोस्त
- दो बैलों की कथा

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

1. ईदगाह

सारांश:

'ईदगाह' एक छोटी लेकिन अत्यंत मार्मिक कहानी है जिसमें एक गरीब बच्चा हामिद ईद के मेले में जाता है। सभी बच्चे खिलौने और मिठाइयाँ खरीदते हैं, लेकिन हामिद अपनी नानी की जरुरत समझते हुए मेले से चिमटा खरीदता है ताकि उसकी नानी रोटियाँ सेंकते समय जलने से बच सके।

मुख्य भाव:

- त्याग और संवेदनशीलता का अनूठा उदाहरण।
- बालमन की सरलता और गहरी समझ।

---

2. नादान दोस्त

सारांश:

यह कहानी दो बच्चों, अहमद और उसके मित्र के भोलेपन और मासूम दोस्ती पर आधारित है। कहानी में यह दिखाया गया है कि कैसे नासमझी और अनजाने में किए गए कार्यों के बावजूद सच्चे मित्र एक-दूसरे के प्रति प्रेम और समर्थन बनाए रखते हैं।

मुख्य भाव:

- सच्ची मित्रता और मासूमियत का चित्रण।
- गलतियाँ होने पर भी क्षमा और अपनापन।

---

3. दो बैलों की कथा

सारांश:

यह कहानी हीरा और मोती नामक दो बैलों की है, जो अपने स्वामी के प्रति अत्यंत वफादार हैं। जब उनका स्वामी अन्यायपूर्ण परिस्थितियों में पड़ता है, तो ये दोनों बैल अत्याचारों का सामना करते हैं लेकिन अपने मालिक का साथ नहीं छोड़ते।

मुख्य भाव:

- वफादारी, आत्मसम्मान और संघर्ष की भावना।
- पशुओं के माध्यम से मानवीय मूल्यों का चित्रण।

egyanarchive